सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

# मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, जनवरी-फरवरी, 2014

## 'सब कुछ' पाने केलिए 'कुछ नहीं' बनें

'पृथ्वी बेडौल और वीरान थी ... और परमेश्वर का आत्मा जल की सतह पर मण्डराता था। ' (उत्पत्ति 1:2)

जब पृथ्वी बेडौल और वीरान थी परमेश्वर का आत्मा , आकार, सौंदर्य और सम्पूर्णता का सृजन कर पाया। परमेश्वर ने आज्ञा दी कि इस दुनिया की सृष्टि हो। उसकी सृष्टि कैसे हुई, हम नहीं जानते। मगर परमेश्वर ने ऐसा कहा और वह हो गया। एक आदमी जब तक इस तरह वीरान न बनकर , अपने हृदय में यह जान न ले कि वह बेडौल है , परमेश्वर उस पर कार्य नहीं कर पायेंगे।

आदमी को यह जानना है कि उसका अस्तित्व कुछ नहीं और वह नगण्य है। यह समझ

*'सब कुछ' पाने केलिए.. पृष्ठ 2 पर*

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

***परमेश्वर की चुनौती***

*STAR UTSAV*

***चैनल पर***

*हर **रविवार सुबह 7:30 से 8:00** बजे*

## छेद वाला बर्तन

'क्योंकि उसकी (यीशु की) परिपूर्णता में से हम सबने पाया , अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह। ' (यूहन्ना 1:16)

एक बर्तन की तली में बचे-खुचे भाग को पीने से आप तृप्त नहीं हो पाएंगे क्योंकि वह मात्रा में बहुत कम होगा। हम में से कई परमेश्वर को ऐसे दिखाते है मानो वह कोई गरीब इनसान है। केवल वह बूँद दर बूँद ही दे रहे है। ऐसा क्यों है कि हम उसकी परिपूर्णता को देख नहीं पा रहे है। उसकी परिपूर्णता से हम क्यों नहीं ले पा रहे है? एक पात्र, जिस में एक ओर छिद्र हो , उस छिद्र के ऊपर उसे भरना असंभव है। वह भरा नहीं जा सकता क्योंकि उसमें छेद है। अगर उस पात्र के निचला भाग में भी एक छेद हो , उस छेद से भी पानी बाहर आयेगा। चाहे आप जितना भी उसे भरने की कोशिश करो , वह जल्दी खाली हो जायेगा।

'क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सबने पाया। ' हम में छेद बनाने के लिए , मैं नहीं जानता, शैतान ना जाने कितनी योजनायें इस्तेमाल करता है।

अगर हम उन छिद्रों को नहीं भरेंगे, तो हम में वह परिपूर्णता कभी नहीं दिखेगी। कुछ लोगों के बर्तन में ठीक तली में एक छेद है। घमंड - आत्मिक घमंड - वह छेद है। ऐसे बरतन को किसी भी चीज से भर नहीं सकते। क्योंकि छेद ठीक तली में है। जो कुछ भी उस में भरा जाय वह बाहर बह जायेगा। परमेश्वर ना जाने कितनी आशीषों को हमारी तरफ बढ़ा रहें हैं। जब की हम इस नये वर्ष में प्रवेश कर रहें है , उन अनगिनत आशीशों के लिए जो हमने उनसे पाई हैं , हमारे दिल कृतज्ञता से भर जाये। भजन लिखने वाला कह रहा है, अगर हमारे हृदय स्तुति से भरे हों, तो शैतान हमारे नजदीक आ नहीं सकता।

प्रभु के साथ सहभागिता का मतलब है, उसकी परिपूर्णता में प्रवेश करना और कई बातों को पीछे छोड़ देना। कई ऐसे बातें है जो आध्यात्मिक उन्नति में बाधा डालती हैं। उनको फेंक देना है। तभी आप कुछ और अधिक पाने के लिए तैयार हो जायेंगे। इसीलिए संत पौलुस कहते है , 'जो बातें पीछे रह गई हैं , उन्हें भूलकर ...'

उन के बारे में दुबारा सोचने का साहस आप नहीं कर सकते। नकारात्मक और बेकार विचार आपके बर्तन में बड़ा-बड़ा छेद है।

'क्यों कि उसमें परमेश्वरत्व की समस्त परिपूर्णता सदेह वास करती है , और तुम उसी में परिपूर्ण किए गए है। और वही समस्त प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।' (कुलुस्सियों 2 :9-10) 'यीशु मसीह में आप परिपूर्ण हो।' आधे तैयार होने का सवाल ही नहीं उठता। आप परिपूर्ण हो , और सिद्ध हो। लेकिन कम से कम क्या हम उस सिद्धता की तरफ बढ़ने का प्रयास कर रहे है ? 'और मैं जानता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो मैं मसीह की आशिष की परिपूर्णता के साथ आऊँगा।' (रोमियों 15 :29) यह मेरे लिए हमेशा एक चुनौती वाला वचन है। जहाँ भी आप जाओ, वहाँ आशिष ठहरो, संकट नहीं, दरार पैदा करना नहीं और अपने भाई के बारे में कोई नकारात्मक या बेकार बातें नहीं क्योंकि यह शैतान का काम है। अपने भाई को खुशी-खुशी अभिवादन करने में अगर कोई असमर्थ है, तो वह परमेश्वर की आराधना करने नहीं आये। वह एक भयानक बात है। बाइबल कहती है, 'जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं करता तो वह परमेश्वर से जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं कर सकता।'

हम बहुत सावधान रहें। निश्चल मसीहत , घिसी-पीटी बेजान मसीहत, भविष्य में आज्ञा पालन का विचार , ये सब बहुत बडे, छेद हैं। सब कुछ खाली हो जाता है और कुछ नहीं बचता - परिपूर्णता नहीं। बहुधा मैं परमेश्वर से कहता हूँ , 'प्रभु आप मेरी उम्र जानते हो। अब तक मुझे अध्यात्मिक रूप से परिपक्व हो जाना चाहिए था। मसीह की पूर्णमहत्ता मैं कब पाऊँगा ?' हम प्रभु के पास जाकर इस तरह प्रार्थना करेः 'प्रभु, कई साल बीत गए है। मेरी परिपूर्णता कहाँ है?'

हम अपने मसीही जीवन के स्तर पर संतुष्ट होकर न बैठें। क्या आपने ईसा मसीह की परिपूर्णता को पाया है ? या तुम बिलकुल खाली पड़े हो ? आप किसकी परिपूर्णता को पा रहे हो? आइए सावधान रहें। ऐसा न हो कि हम अपने बलबूते पर ही सब कुछ पाने की कोशिश कर रहे हों बल्कि हमें उसकी परिपूर्णता की ज़रूरत है।

जो आपको बनना चाहिए वह है एक शुद्ध पात्र, जिसमें कोई छेद नहीं। बाकी सब कुछ प्रभु संभालेंगे। आपको सिर्फ यही करना है कि उनके अनुग्रह और उनके लहू के द्वारा शुद्ध हो जाओ। आपके विचारों और आचार में शुद्ध बने रहो। तब प्रभु अपनी परिपूर्णता से आपको भर देंगे।

- जोशुआ दानियेल।

*'सब कुछ' पाने केलिए... पृष्ठ 1 से*

उसमें आने के लिए 'प्रार्थना' सहायक है। यीशु से मिलने से पहले, आदमी सोचता है कि वह एक महान व्यक्ति है। उसे और अधिक महत्वपूर्ण बनना है। आप तुच्छ हो, यह जानने के लिए प्रभु यीशु के पास आना एक अच्छी बात है। जो आदमी प्रार्थना करता है जल्दी यह जान लेता है कि वह अपने आप कुछ भी करने में असमर्थ है। यीशु इस स्तर पर आये: 'मैं स्वयं अपनी ओर से कुछ नहीं कर सकता। जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ। ' (यूहन्ना 5 :30) आप स्वयं कुछ नहीं कर पाओगे। प्रार्थना हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर के सामने हम कुछ भी नहीं है। मूसा ने कहा, 'मैं कौन हूँ जो फ़िरौन के पास जाऊँ ?' अगर

**ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.**
**BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002**
**CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393**
**MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840**
**GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733**
**SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355**

आप सोचते हो कि परमेश्वर के लिए आप कुछ कर सकते हो , तो परमेश्वर आपके जरिये कुछ नहीं कर पायेंगे। एक सच्चा मसीही उस नतीजे पर पहुँचता है जहाँ वह कहता है , 'प्रभु मुझमें कुछ ज्ञान नहीं। मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा। इस से पहले जो कुछ भी मैंने आप के लिए करने की कोशिश की, उसका कुछ भी मूल्य नहीं।'

परमेश्वर की सेवा कर रही एक धार्मिक महिला यह प्रार्थना कर रही थी कि परमेश्वर उसका उपयोग करें। उसने मैले चिथड़ों को पकड़े एक सफेद हाथ को देखा। और एक वाणी ने कहा , 'तेरे सारे कार्य मैले चिथड़ों के समान है। तेरे धर्म के काम और तेरी सारी सेवा मैले चिथड़ों के समान है। ' अगर आप को इस बात का एहसास हो जाये , तो परमेश्वर आप पर नियंत्रण पायेंगे। जब सब कुछ विरान था, परमेश्वर आये और इस दुनिया का सृष्टि की। अपने ही स्वरूप में मनुष्य की सृष्टि की। और वे अपना स्वभाव भी मनुष्य को देना चाहते है।

केवल एक आदमी से कितनी आध्यात्मिक शक्ति आ सकता है इस दुनिया ने अभी तक नहीं देखा। हम उस मसीह के हैं, जो टूटा , जिसका शरीर घायल है, जिसके हाथ और पैर छिदे गये है। हम कुछ भी नहीं , क्रूस हमें यह एहसास दिलाता है। जब हम प्रार्थना में उन्नति करते हैं हम छोटे बनते जायेंगे। और यीशु महान और महान बनते जायेंगे जब तक वे इस तारामण्डल में न भर जायेंगे।

यीशु आप में भी आ सकते है क्योंकि आप के लिए वे तोड़े गये है। आप जो , कुछ नहीं हो, उनमें समा सकते हो, जो सब कुछ है। तब सब लोग आप में मसीह को देख पायेंगे। आपका स्पर्श, शब्द और जीवन बिलकुल मसीह जैसा होगा।

उस विरानी में परमेश्वर आये और सारे संसार का सृजन किया। सारे संसार से भी बढ़कर अद्भुत है , मनुष्य, जिसकी परमेश्वर ने सृष्टि की। प्रार्थना हमको, परमेश्वर के सामने शून्य बनाती है। इस शून्य में परमेश्वर आयेंगे और हमें एक नई सृष्टि बनायेंगे जो मसीह के स्वरूप में होंगी।

- एन. दानिएल

## *क्षतिग्रस्त जहाज़ में शान्ति*

सौऊथऐम्पटन से न्यूर्क जाते, एक समुद्री यात्रा के दौरान , परमेश्वर के धर्म प्रचारक डी.एल मूडी जी अचानक उस धड़ाके और दहशत से चौंक गये। मुख्य स्तंभ के टूट जाने से उस जहाज़ को गम्भीर क्षति पहूँची। उस जहाज़ में सफर कर रहे सौइयों यात्रियों को उस पहली रात, एक भयानक अनुभव रहा। पहले केबिन के एक अलीशान कमरे में भरी घिचपिच भीड़ में यहूदी , प्रोटेस्टेंट्स, कैथोलिक और संशयवादी इत्यादी लोग थे - हाँलाकि मूडी जी का यह मानना था कि शायद ही कोई सच्चाई में संशय करने वाले कोई उस व्यक्ति वहाँ मौजूद हो?

बिना कोई आशा या मदद लाये रविवार की सुबह पौ फटी; जब रात होने लगी, तो मूडी जी ने उस कमरे में ही सभा आयोजन करने की इजाज़त माँगी। लगभग सभी यात्री वहाँ मौजूद थे। एक खम्बे के बल खड़े हो कर मूडी जी ने भजन संहिता 91 और 107:20-31 पढ़ा; और उन्होंने परमेश्वर से विनती की कि उस प्रकोपी समुद्र को वह शान्त करें और सब को अभीष्ट आश्रय पहुँचाये। भजन संहिता 91:11 बहुत मन को छूने वाला लगा: 'क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा , कि वे तेरे सब मार्गें में तेरी रक्षा करें।'

मूडी जी अपने आप को मृत्यु का भय से परे सोचाथा ; और उस विषय पर प्रचार भी किया था ; एक गृह युद्ध में गोलाबारी के दौरान भी वे निडर रहे; भयानक हैजे की महामारी से पीड़ित लोगों को मदद करने उनके पास गये थे। मगर उस डूबते जहाज में माहौल कुछ अलग ही था। वे जानते थे कि उद्धारकर्ता , और उनका मन , दोनों के बीच आडे कोई पाप का बादल नहीं है। फिर भी घर पर उनके अपने प्रिय लोगों का क्या होगा ? इस विचार ने उनको हिला दिया। उनको उस आघात से उबरना होगा और वह सिर्फ प्रार्थना से संभव हुआ।

परमेश्वर ने उनकी पुकार को सुना , और अपने मन की गहराइयों से मूडी कह पाये , 'आपकी इच्छा पूरी हो !' मधुर शान्ति उनके हृदय में भर गई। वे सोने गये और मानो जिन्दगी में पहले कभी ऐसे न सोये हों, इतनी गहरी नींद वे सो गये। 'हे यहोवा, मैंने तुझे गहराइयों में से पुकारा है। उसने मुझे उत्तर दिया और मेरे सब भय से मुझे छुटकारा दिया। (भजन संहिता 130 :1 और 34 :4 देखे) - वह मूडी जी का अनुभव रहा।

सुबह करीब तीन बजे ,

बेटे द्वारा मूडी नींद से उठाये गये। एक स्टीमर ने विपदसूची संकेतों को देखा था। और उस आपदग्रस्त जहाज़ को 1000 मील की दूर पर क्वीन्सटौन तक पीछे बांध कर ले जाने का बीडा उठाया। अगर कोई तुफान उठे तो उन दोनों जहाज़ों के बीच बांधी गई रस्सी एक धागे की तरह टूट जायेगी। मगर मूडी जी को यह विश्वास था कि जो परमेश्वर ने शुरू किया है वही उसको पूर्ण भी करेंगे। उस स्टीमर का कप्तान जो प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था उसने इस कार्य में परमेश्वर की सहायता माँगी थी। हाँलाकि चारों तरफ आँधियाँ उठ रहीं थीं मगर उस क्षतिग्रस्त जहाज़ के आस पास एक भी नहीं आया। उस दुर्घटना के एक हफ्ते के बाद , क्वीन्सटौन बंदरगाह में एक कृतज्ञता सभा का आयोजन किया गया, क्योंकि परमेश्वर का भाला हाथ उन सब के ऊपर रहा है।
- विल्यम रेवेल्ल मूडी का 'द लाइफ आफ डि.एल. मूडी' से चुनी हुई।

## *वापस करने की आवश्यकता*

तुम ने अगर कभी भी बेईमानी से पैसे लिये हो और वापस नहीं किये हो - तुम्हें परमेश्वर से यह प्रार्थना करने की कोई जरूरत नहीं है कि वह तुझे माँफ करें और तुझे पवित्र आत्मा से भर दे। तब तक , जब तक तुमने उन पैसों को वापस न किया हो। अगर तुम्हारे पास वापस करने के लिए अभी पैसे नहीं है , मगर तुम वापस करना चाहते हो , परमेश्वर वापस करने के लिए तैयार इच्छुक मन को स्वीकार करते है। कई लोग अन्धकार और अशान्ति में रह रहे हैं। क्योंकि इस विषय में वे परमेश्वर की मानने में असफल है। अगर तुम्हारा पश्चाताप सही है और दिल गहराई में पहुँचा है , तो वह जरूर फल लायेगा। अगर मैंने किसी व्यक्ति के साथ गलत किया है या गलत तरीके से किसी से कुछ लिया है, जब तक मुझ में जक्कई की तरह , उसे सही करने की चाह न हो - परमेश्वर के पास आने का क्या लाभ है ? स्वीकार करना और वापस करना , माफ़ी पाने की ओर ले जाने वाली सीडियाँ है।

मेरा एक दोस्त था जो मसीह के पास आया था। वह अपने आप को और अपनी सारी संपत्ति परमेश्वर को समर्पित कर रहा था। वह पहले सरकार के साथ लेन देन रखता था। और उसका गलत फायदा उठाया था। यह बात उसके मन में आयी और उसकी अन्तरात्मा उसे दोषी ठहराने लगी। वह कम पैसे सरकार को अदा करता था। अन्त में उसने बाकी रकम का चेक निकाला और सरकार के कोषागार में भेज दिया। उसने मुझसे कहा कि ऐसा करने के बाद उसे बहुत आशीष मिली है। यही पश्चाताप के द्वारा फल लाना है। मुझे यह विश्वास है कि बहुत ही अधिक संख्या में आदमी, प्रकाश पाने के लिए परमेश्वर को पुकार रहे हैं। और अधिक्तर लोग उसे प्राप्त नहीं कर पा रहें हैं। क्यों कि वे ईमान्दार नहीं है।

एक आदमी हमारी सभाओं में आया था। वापस करने के विषय पर उस सभा में बातें हुई थी। एक बेईमान लेन-देन की याद उसके मन में कौंधी। तुरन्त उसे यह आभास हुआ था कि कैसे उसकी प्रार्थना का जवाब नहीं मिल रहा था। जैसे पवित्रशास्त्र कहता है, बिना जवाब प्रार्थना वापस उसकी गोद में लौट आयी , वह सभा छोड कर चला गया। सीधे वह रेलगाडी पकड़ कर एक दूर शहर में गया। वहाँ उसने बहुत साल पहले अपने मालिक के साथ कपट किया था। वह सीधा उस मालिक के पास गया। उसने उसके सामने अपनी गलती को मान लिया। और पैसा वापस करने का प्रस्ताव रखा। तब उसको एक और लेनदेन याद आया। वह अपने ऊपर आयी एक सही माँग को पूरा करने में असफल रहा था। उसने तुरन्त एक बहुत बड़ी रकम को वापस करने का इन्तजाम किया। वह दुबारा उस जगह पर आया जहाँ हम अपनी सभाओं का

## सत्य की परख!

***"जो पुत्र पर विश्वास करता है , अनन्त जीवन उसका है , परन्तु वह जो पुत्र की नहीं मानता जीवन नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का प्रकोप उस पर बना रहता है। " (यूहन्ना 3:36)***

आयोजन कर रहे थे। परमेश्वर ने आश्चर्यजनक रीति से , उसके आत्मा में बहुत आशीष दी। बहुत समय से मेरी मुलाकात ऐसे आदमी से नहीं हुई है , जिनको ऐसी आशीष मिली हो।

जब मैं केनेड़ा में था , एक आदमी ने मुझ से कहा कि जब वह छोटा था, एक आदमी ने उसे गलती से एक सिक्का दिया था। केनेडा में वह दस शिलिंग कहलाता था। वह डालर के सिर्फ पौने भाग का होगा और सोने का था। उस लडके को निर्धारित , चाँदी की शिलिंग देने के बजाय , उस आदमी ने उसे सोने का दस शिलिंग गलती से दे दिया। उस लडके ने उसको रख लिया। अगले दिन वह आदमी उस लडके के पास लौटा आया बोला , 'कल जब मैंने तुम्हे रेजगारी दी थी , क्या मैंने तुमको एक शिलिंग के सिक्के के बदले दस शिलिंग का सिक्का नहीं दिया ?' उस लड़के ने झूठ बोला, 'नहीं, साहब, आप ने नहीं दिया।'

43 साल तक उस आदमी की अन्तरात्मा पर इस झूठ का बोझ था। आखिर में परमेश्वर के आत्मा का प्रभाव उस पर आया और वह मसीही बन गया। वह अब नहीं जानता था कि उस आदमी को कहाँ ढूंढे। इसलिए उसने ब्याज का अनुमान लगाया और सूद समेत मूल को एक आनाथालय में दे दिया। आखिर उसने इस झूठ को अपनी अन्तरात्मा से हटाया। अगर तुम्हारे अन्तरात्मा में कुछ है, उसे तुरन्त सुधारो। अगर तुम्हारा मन किसी बीते लेन-देन पर जाता है जिस में तुमने अपने पडोसी के साथ छल किया है, तुरन्त उसे हर एक पैसा वापस करो।

- डि.एल.मूडी

# *एक मां का अटूट विश्वा स*

'सोफी, तुम उसे छोड़ क्यों नहीं देती' उसके रिश्तेदारों , मित्रों और पड़ोसियों ने उससे विनती करते हुए कहा , 'वह एक पियक्कड़ के सिवाय और कुछ नहीं बन सकता।'

सोफी मेरी मां थी और यह शराबी मेरे पिता थे। हमारे लिए, उनके बच्चे, वे हमेशा से हमारे 'मां और पापा' ही थे।

चिन्तित मित्र हमारी भलाई को ध्यान में रखते हुए हमेशा मां से कहा करते परन्तु मां का केवल एक ही उत्तर होता, 'बच्चों की खातिर,मैं उनके साथ रहूंगी , मैं उनके लिए प्रतिदिन प्रार्थना कर रही हूं कि वे बदल जायें।'

सोफी एक प्रवासी जर्मन कब्र खोदने वाले की बेटी थी जो अमरीका के एक शहर में रहते थे। एक दिन अपनी एक सहेली के घर में सोफी जॉन से मिली , जो शहर से बाहर रहने वाला एक आकर्षक नौजवान था। पहली ही नजर में वे एक दूसरे से प्यार करने लगे। और जल्दी ही उन्होंने विवाह भी कर लिया। उन्होंने अपने पैतृक स्थान, यानी न्याग्रा जलप्रपात के एक शहर , न्यूयार्क में अपना घर बसा लिया। जॉन व्यवसाय से एक कसाई था जो कुशल पेशेवर कसाई न होते हुए भी काफी पैसे कमा लिया करता था।

विवाह के एक वर्ष बाद इस नये दम्पति के यहां एक बालक ने जन्म लिया, जीवन बड़े आनन्द से व्यतीत हो रहा था। उन्होंने उसका नाम क्लेरेन्स रखा। उसके बाद जल्दी जल्दी और भी बच्चे मां सोफी की बांहों में आते गये। उनका नाम हेरॉल्ड , ग्रेस और जूनियर जॉन था (इस छोटे जॉन का देहान्त हो गया जब वह छोटा बालक ही था और बाद में और एक बच्चे का जन्म हुआ उसका नाम भी उन्होंने जॉन रखा। ) तब मैं , हेलेन, केम, फ्लोरेंस इसके बाद और एक जॉन,तब मिन्नी और क्लारा , मेबल और डॉरथी का जन्म हुआ। हम पूरे मिला कर ग्यारह बच्चे थे, मां सभी को प्यार करती थी और सभी को चाहती थी। जब किसी बच्चे को अपनी छाती से लगाती तो वे एक ऐसी महिला नज़र आतीं जो हर समय बड़ी स्वाभाविक दिखती थीं।

यदि मेरे पापा शराब पीना नहीं शुरू करते तो जीवन हमारे लिए खुशहाल रहता। जब उनका विवाह हुआ था उस समय वे पियक्कड़ नहीं थे। पर उन के अंदर यह भावना अपने व्यवसाय की वजह से आई कि उन्हें एक अच्छा मिलनसार व्यक्ति होना चाहिये सो वे समाज में लोगों के साथ शराब पीने लगे। कुछ वर्षों में उन्हें शराब की लत पड़ गई। और जब मैंने जन्म लिया उस समय तक पापा ने अपने घर और अपने मांस की दुकान , दोनों को पीने की लत के कारण गंवा दिया था और परिवार की हालत बड़ी बिगड़ी हुई थी। मुझे याद था कि रेलवे लाइन के पार गंदगी से भरी एक विदेशी बस्ती थी जहां सभी तरह के नीच चरित्र के लोग रहते थे जिस से उसका नाम ही ''लाईन के उस पार '' रखा गया था। हालाँकि यह सुन्दर न्याग्रा जलप्रपात के निकट था किन्तु इस इलाके की सुन्दरता से इस जगह का कोई मतलब नहीं था।

उन दिनों यह देखा जा रहा था कि ठंड का मौसम बहुत जल्द शुरु हो जाता था और काफी लम्बे समय तक रहता। पापा

मुश्किल से ही अपने घर के पुराने चूल्हे के लिए कोयले का इन्तिजाम कर पाते थे। सो मां इन ठंड की दोपहर को अपने आपको पुराने गर्म कपड़ों से लपेट कर रेलवे लाईन के पास जातीं और कोयले के वैगन से जो कोयला गिरता था उनको बोरे में भर कर घसीटते हुए घर को लाती। उनके साथ कुछ ही बड़े बच्चे जहां तक हो सकता जाते क्योंकि उनके पास गर्म कपड़ों की कमी थी। घर लौटते समय ठंड के कारण पैर सुन्न हो जाते और हाथ फट जाता और ठंड से जम जाता था फिर भी उन्हें खुशी होती थी कि चलो मेरे बच्चे दूसरी रात तक गर्म तो रह सकेंगे।

थोड़ा सा रात्रि का भोजन करने के उपरांत बच्चे अपने को पतले फटे-पुराने कंबल से ढंक कर सो जाते और मां बैठ कर पापा के लड़खड़ाते कदमों की आहट सुनती जिसका मतलब होता था कि अब वे शराबखाने से घर आ रहे थे। कभी-कभी वे इतने नशे में होते कि दरवाजे को ढकेल कर खोल भी नहीं पाते थे , उस समय मां उन्हें बर्फ और ठंड से खींचते हुए घर के अंदर लाती थीं। वे एक भारी भरकम व्यक्ति थे, फिर भी किसी तरह मां उनके कपड़े बदलती और बिस्तर पर लिटा देती थीं। इतना सब करने के बावजूद भी पापा के मुंह से प्रशंसा का एक शब्द कभी भी नहीं निकलता था।

मां एक बहुत ही सुन्दर महिला थी उनके नाक -नक्शे आकर्षक थे और काली चमकती आंखें और लहराते काले बाल थे। सौभाग्यवश उनके और उनके बच्चों के लिए ,उनके अंदर जिन्दादिली मजाक का स्वभाव कभी खत्म नहीं हुआ हालाँकि उनका जीवन कड़ुवाहट से भरा था। अक्सर उनमें रूचि रखने वाले मित्र कहा करते थे, ''सोफी, उसके बिना तुम बेहतर जीवन जी सकती हो। क्यों तुम हमारी बातों को नहीं सुनती .... पर मेरे जन्म के समय तक, मां को आश्चर्यजनक आत्मिक अनुभव प्राप्त हो चुका था। जिसने उनको बाहर शांति और आत्मविश्वास से सुसज्जित कर रखा था।

एक बार यहां शहर में एक विशाल बेदारी की सभा हुई थी , उसी समय मां ने यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर लिया था और उसी क्षण उन्हें यह आश्वासन भी मिल गया था कि उन्होंने न केवल उद्धार पाया, साथ ही वह चीज पा ली थी जो उनके शराबी पति के जीवन को भी बदल सकती थी। जब उन्होंने इस बारे में अपने पति से बातें कीं तो वे हंसे और उन्हें डांटने लगे और उसके बाद पहले से और भी ज्यादा शराब पीने लगे। बारह वर्ष तक ऐसा लगा मानो शैतान ने उन्हें पूरी तरह से अपने कब्जे में कर रखा था। मां को लगातार इस बात का डर रहता था कि कहीं अपने इस भयंकर क्रोध के दौरान पिता हम में से किसी को हानि न पहुंचा दें। और मुझे मालूम था कि कई बार माँ की सावधानी और हस्तक्षेप के कारण ही हम बच गये थे।

हर रोज की तरह उस रात भी पापा नशे में डूबे थे जबकि उनकी छोटी मिन्नी कुकुरखांसी के कारण श्वास बंद हो जाने के कारण मां की बांहों में ही दम तोड़ दिया था। एक दिन बाद ही पापा इस हालत में आये कि उस छोटी बच्ची की अंत्येष्टि में शामिल हो सकें। उसके बाद एक साल तक पापा पूरी तरह से शराब में डूबे रहे , उनके दिमाग में स्थायी तौर पर मदहोशी कुहरे का भांति छायी रहती। पापा की अपनी बहनों ने मां से आग्रह किया कि कुछ अनहोनी घटने से पहले ही वह बच्चों को लेकर कहीं चली जाएं। किन्तु मां का उत्तर कभी भी नहीं बदला। वे कहा करतीं, 'मैं ने प्रार्थना की है कि जॉन का जीवन बदल जाये , और परमेश्वर उत्तर देंगे। मुझे इसका निश्चय है।'

नवम्बर की एक बर्फीली शाम को पापा लड़खड़ाते हुए समय से पहले घर आ पहुंचे। उस समय मां एक बिमार पड़ोसी की मदद करने गई थी , जॉनी, जो पांच साल का था , वह कुछ बड़े बच्चों के साथ घर पर था। पापा बहुत ही कम बच्चों पर ध्यान देते थे , पर उनका एक अतिप्रिय था जो था जॉनी । उस रात जॉनी उनसे दरवाजे पर ही मिल गया , उसने अपने उतेजित बालसुलभ तरीके से बताया कि रेलवे लाईन के उस पार कम्युनिटी हॉल में आत्मिक जागृति (परमेश्वर के वचन बाईबल से उपदेश देने की ) सभा हो रही थी। 'क्या आप जायेंगे और अपने साथ मुझे भी ले जायेंगे ,पापा आप जायेंगे न पापा ' जॉनी अपने पापा को फुसला रहा था। पापा ने इतनी पी रखी थी कि कुछ करने लायक नहीं थे।

'निश्चय जॉनी , आओ चलें,'उन्होंने उत्तर दिया। जॉनी बहुत खुश हुआ और उसने अपना छोटा कोट पहन कर उसमें सेफ्टी पिन लगाया और अपने सिर पर एक लाल रंग की फुदने वाली टोपी पहन ली। पापा का हाथ पकड़ लिया, वह और पापा बर्फ में पैरों

को घसीटते हुए आगे बढ़ने लगे , पड़ोसियों की उबड़ खाबड़ जगह को पार करते हुए रेलवे लाईन को पार किया जहां कि काफी अच्छे घर बने थे। जब वे रेलवे लाईन के फिसलते हुए पगडंडी पर चल रहे थे, पापा के कदम अस्थिर थे पर छोटा जॉनी उनको आधा सहारा दे रहा था।

जब वे छोटे कम्युनिटी हॉल के निकट पहुंचे जहां सुसमाचार सभायें हो रही थीं , पापा लोगों के गाने की आवाज सुन रहे थे, ''बर्फ से भी सफेद, हां, बर्फ से भी सफेद, प्रभु मुझे धो और मैं बर्फ से भी सफेद हो जाऊंगा।'' तब पापा को पता चला कि उनके कपड़े अस्त व्यस्त थे, उन्होंने दाढ़ी भी नहीं बनाई थी और बहुत अधिक पी रखी थी।

''जॉनी''उन्होंने अपने बगल में उस उत्साहित लड़के के ऊपर एक नजर डाली। और जॉनी से कहा, ''आओ घर चलें और कल रात साफ कपड़े पहन कर हम यहां आयेंगे। '' जॉनी की हंसी गायब हो गई और ऐसा लगा कि वह अब रो पड़ेगा।

'नहीं,पापा,नहीं ! आईये हम अभी ही जायेंगे ,' उसने पापा से मिन्नत की ,और अपने पापा के हाथ को पकड़ कर खींचता हुआ ले गया। अत्याधिक पीने की वजह से उनमें तर्क करने की क्षमता भी नहीं थी , पापा लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़े और दरवाजा खोला। उन्होंने पंजों के बल चलते हुए पीछे की सीट पर बैठने की कोशिश की ,पर उनका यह शांतिपूर्वक बैठने का प्रयास कामयाब रहा। अंत में वे और जॉनी बैठ गये।

जब पापा गर्माहट और चमकती हुई रोशनी के अभ्यस्त हो गये, तब उन्होंने मंच में पुल्पिट के पीछे खड़े व्यक्ति पर अपनी नजर गड़ाई। आश्चर्य से चौंक गये उनकी सांसें तेजी से चलने लगी और वे अपने आप बुदबुदाने लगे।

'बॉब ! मेरा पुराना मित्र , बॉब ! यह नहीं हो सकता .....'

उन्हें वह समय याद आया जब वे और बॉब पूरे शहर के शराब खाने में एक साथ वक्त बिताया करते थे। पर यह वही मेरा पुराना दोस्त, बॉब था। अचानक ही प्रचार करना बन्द हो गया। पापा को पहचान कर , प्रचारक झिझक में बिना एक पल गंवाये पुल्पिट से नीचे आ गये और वहां पहुंचे जहां पिछली सीट पर पापा और जॉनी बैठे थे।

'जॉन !'प्रचारक ने अपनी बांहें पापा के कंधों पर रखते हुए आश्चर्य से चिल्लाये। 'जॉन, तुम जानते हो कि किस प्रकार का जीवन मैंने बिताया था। पर , देखो ! परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया, वे तुम्हारे लिए भी करेंगे। इधर आओ , जॉन,मेरे साथ आओ।'

पापा अपने पैरों के बल खड़े हो गये और जॉनी को पकड़ कर धीरे धीरे बड़े अस्थिर कदमों से वेदी की ओर चलने लगे। वहां पहुंच कर घुटने टेके उनकी एक ओर छोटा जॉनी था और दूसरी ओर उनका मित्र बॉब था, उन का हृदय शर्म, ग्लानि और निराशा से भरा था वे चिल्लाये ,'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।'

तब आश्चर्यजनक घटना हुई - वह आश्चर्य जो केवल परमेश्वर ही कर सकते हैं। जब पापा अपने घुटनों से उठे , वे उस समय बिलकुल सामान्य थे। एक घंटी की तरह उनका दिमाग साफ था। जिस वक्त उनका परिवर्तन हुआ परमेश्वर ने उनके सभी पाप क्षमा कर दिये। और उसके साथ केवल उनके उस दिन के पीने पर ही नहीं ,बल्कि उनके वर्षों के पीने की आदत से उन्हें पूर्ण रूप से छुटकारा मिल गया। पापा ने सभा के बाद जाने पहचाने लोगों से हाथ मिलाया,और स्थिर कदमों से दरवाजे की ओर गये और वे और जॉनी रात में घर की ओर रवाना हो गये।

'जॉनी'पापा आसमान की ओर देखते हुए आश्चर्य से बोले, 'वे तारे इससे पहले कभी इतने चमकीले नहीं नजर आये थे, वे हीरों की तरह दिख रहे हैं।'

जब वे घर पहुंचे उस समय मां घर पर थीं और जब उन्होंने पापा के स्थिर कदमों की अपरिचित आवाज सुनी , वे जल्दी ही दरवाजा खोलने को लपकीं। पापा ने अनोखे कोमल भाव से उन्हें अपनी बांहों में ले लिया और टूटे स्वर में कहा ,''सोफी, आज रात से तुम्हें एक नया पति मिल गया है।''

इससे पहले कि पापा सुसमाचार सभा में क्या हुआ बतायें, मां खुशी से बोलीं, ''परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया हैं ! मैं जानती थी कि वे मुझे कभी निराश नहीं करेंगे !''

उस रात हम सभी खुशी के मारे बहुत रोये और हंसे भी पर अधिक रोये। तब पापा ने एक जीर्ण-शीर्ण बाइबल निकाली जिसे मां ने पापा को वर्षों पहले दिया था और यूहन्ना के तीसरे अध्याय से पढ़ने की कोशिश करने लगे। पापा अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे और एक अच्छे पढ़ने वाले नहीं थे , पर मां की मदद से उन्होंने इस सुसमाचार के भाग को संघर्ष करते हुए पढ़ा। तब हम सभी ने उस रात घुटने टेके और पहली बार घर में पारिवारिक प्रार्थना हुई।

अगली सुबह पापा काम

करने के लिए घर से निकले, हम अपने को रोक नहीं सके और उन्हें देखने के लिए खिड़कियों से झांकने लगे। हमारी गली के नीचे ही एक शराबखाना था। वर्षों से पापा हर सुबह अपनी आंखे खोलने वाला यानि थोड़ी सी बीयर(शराब) ले लिया करते थे। जब हमने पापा को शराब खाने के पास से गुज़रते हुए देखा हमारे हृदय बेतहाशा धड़कने लगे । क्या वे दरवाजे पर झिझके हमारी सांसें रूक गई - तब हमने उन्हें आसमान की नजर उठाते हुए देखा, जैसे कि वे प्रार्थना करके परमेश्वर से शक्ति मांग रहे हों। फिर अपने कंधों को सीधा करते हुए पापा स्थिर कदमों से आगे की ओर बढ़ गये।

मां ने तुरन्त ही घुटने टेके, ''धन्यवाद, प्रभु यीशु ,'' उन्होंने सरलता से कहा। इसके बाद पापा ने और कभी भी शराब की एक बूंद तक भी नहीं चखी।

पापा ने निर्णय किया कि वे बाइबल पढ़ना सीखेंगे। सो मां हर रात उनके साथ धैर्य से बैठतीं और परमेश्वर के वचन को पढ़ने और समझने में उनकी मदद करतीं थीं। यह बहुत ही आश्चर्य की बात थी कि पिता जिन्होंने कभी भी समाचार पत्र और पुस्तक नहीं पढ़ी थी, पर अब वे बाइबल को धाराप्रवाह के साथ पढ़ने लगे थे। औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद भी हमारे राज्य के कई भागों में वे प्रचारक बन गये। शहर के एक अच्छे भाग में जाने के थोड़े समय पहले तक हमारे पास सांसारिक चीजें बहुत ही कम थी। उस समय अमेरिका निराशाजनक स्थिति से गुजर रहा था, पर इसके बावजूद, पापा को उनके बुरे जीवन से छुड़ाने के लिए वे प्रभु के प्रति बहुत ही कृतज्ञ थे कि उन्होने इस बात का एहसास किया कि उन्हें एक कर्ज चुकाना था जो उनके लिए प्रभु द्वारा चुकाया गया था। और मां बहुत खुश थी उन्होंने पिताजी से कहा , ''जब तक यह देना दर्द पहुंचाना बंद न कर दे तब तक यह देना बन्द न करो !''

पहला काम जो पापा ने किया वह यह था कि वे अपने सभी शराब पीने वाले मित्रों के पास गये और उन्हें सुसमाचार सभाओं में जाने के लिए बाध्य किया। वे बहुत खुश थे क्योंकि बहुतों ने यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता (मुक्तिदाता और प्रभु) ग्रहण किया और उनको एक नया जीवन मिला। इसलिए कि उस समुदाय में कोई चर्च नहीं था , मां और पापा और दूसरे परिवर्तित शराबी और उनकी पत्नियां और परिवार के लोगों ने यह फैसला किया कि उनका एक आराधना स्थल होना चाहिये। सो उन्होंने एक कम्युनिटी हॉल को खरीदने का बन्दोबस्त किया और अपने मित्र बॉब को इस छोटे झुंड का पास्टर बनने को कहा। जहां पर कम्युनिटी हॉल था वहां आज एक अच्छे ईंटों से बना चर्च स्थित है।

जल्द ही पापा को एक मीट ट्रक मिल गया और मांस का वितरण करने के लिए उन्हें प्रतिदिन न्याग्रा जलप्रपात के निकट टस्कारोरा इंडियन रिजर्वेशन के रास्ते से होकर जाना पड़ता था। एक दिन एक रेड इंडियन ने उन से कहा कि उस रिजर्वेशन में एक छोटा चर्च था जो वर्षों से बंद पड़ा था उसकी निलामी होने वाली थी। उस रात ,पापा सो नहीं सके क्योंकि उन्हें भय था कि कहीं परमेश्वर का यह घर एक सराय या जुआ खेलने का अड्डा बनाने के लिए न बेच दिया जाये।

उन्होंने मां से कहा , ''क्या यह हमारे लिए सही होगा कि हम उसके लिए कुछ न करें।''

पापा निलामी में गये , और उनके पास अपने कुछ पैसे थे और कुछ उनके मित्रों ने दिये थे जिससे उन्होंने उस जमा पूंजी द्वारा बिकाउ चर्च की इमारत को खरीद लिया। कुछ मरम्मत करने और रंगाई करने के बाद , पापा ने उस जगह रेड इंडियन लोगों के लिए नियमित रूप से आराधना शुरू की और टस्कारोरा में सत्ताइस वर्षों तक सेवकाई करते रहे।

एक बार ग्रीष्म काल में मां और पापा एक संक्षिप्त दौरे पर बिंघमटन, न्यूयार्क के प्रायोगिक बाइबल ट्रेनिंग स्कूल के कम्पाउण्ड में गये। वे वहां ठहरे और पेड़ों की छाया से भरे मैदान में घूमे , और वहां के कुछ प्राध्यापक वर्ग से मिले। उसके बाद से मां यह प्रार्थना करने लगी कि किसी दिन उनका एक बच्चा वहां का छात्र बने।

ग्रेस ने बाइबल स्कूल में प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। उस समय मां ने अपनी बहुत सी जरूरतों को पूरा करने से अपने आप को वंचित रखा जिससे उनकी बच्ची मसीही सेवा के लिए प्रशिक्षित हो सके। एक वर्ष बाद मैं ने मां से कहा कि मैं भी बाइबल स्कूल जाना पसन्द करूँगी। इस समय तक सचमुच मंदी अपनी चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी और हमारा परिवार भी इससे अछूता नहीं रह पाया था। पर मां ने उत्साह बढ़ाते हुए यह कहा, ''प्रभु व्यवस्था करेंगे।''

उन्होंने मेरे लिए प्यार से अलमारी से कपड़े निकाले और उन्हें जोड़ कर उसे मेरे कपड़े रखने के लिए सूटकेस की तरह सिल दिया। ये वे कुछ पुराने कपड़े थे जिसे मेरी आंटियों ने दिया था। वे

सभी चीजें जो मुझे चाहिये थीं मां ने उस सूटकेस में डाल दीं और उनकी पुरानी जिन्दादिली वाले मजाक जो कभी उन्हें नीचे झुकने नहीं दिया था , उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा , ''जब तुम्हारे पास कपड़ों की कमी हो जाये तब इस सूटकेस को पहन लेना।''

आज मैं सुन सकती हूं कि मां प्यार से पापा से कहतीं हैं कि मिन्नी और मेबल और क्लेरेंस और पहला बेटा जॉनी ये सभी उद्धारकर्त्ता के साथ हैं, 'जॉन, मैं बहुत खुश हूं कि मैं तुम्हारे साथ हूं, बच्चों के निमित्त और तुम्हारे निमित्त,और सबसे अधिक प्रभु यीशु मसीह के निमित्त।'

*********

क्या आपका जीवन भी शोक संतप्त या भग्न है जो जीवित परमेश्वर की संगति में नहीं है वह एक असंतुष्ट जीवन है। परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में बनाया है। उन्होंने हमें बनाया कि वे सभी जीवन की आशिषें और अनन्त जीवन या शाश्वत जीवन जिसके लिए उन्होंने हमें तैयार किया है हम उसका आनन्द उठा सकें।

आपकी जो भी कमजोरी क्यों न हो कोई बात नहीं , आपकी स्थिति कितनी भी निराशाजनक क्यों न दिखती हो , आपकी समस्या कैसी क्यों न हो, परमेश्वर आपको क्षमा करने और आपको विजय के नये जीवन में नेतृत्व करने के लिए प्रतीक्षा में हैं और आपका नया जीवन आपके उद्धारक और सृजनहार के साथ आनन्द से अनन्त अस्तित्व में बढ़ता जायेगा।

बाइबल कहती है कि ''सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।'' और आगे यह कहते हैं , ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।'' पर परमेश्वर ने स्वर्ग से अपने एकलौते पुत्र को हमें बचाने के लिए भेजा। उन्होंने मनुष्य का रूप धारण किया और एक कुंवारी से उत्पन्न हुए। वह व्यक्ति यीशु मसीह है। वे परमेश्वर के पुत्र हैं और स्वयं परमेश्वर हैं, वे इस संसार में भेजे गये ताकि हमारे बीच रह कर एक सिद्ध जीवन जीयें और अपने आप को क्रूस पर प्राण देने के लिए दे दिया, अपनी मृत्यु के द्वारा वे मेरे और हम सभी के पापों के लिए कष्ट सहें। यदि आप उनको ग्रहण करते हैं तो वे हमारे पापों के लिए पाप बलि बन गये हैं।

क्योंकि उनके सिद्ध जीवन और उनके कष्ट उठाने के कारण , पाप रहित होते हुए भी हमारे लिए पापी बन गये, अब वे जो उनके बेटे को एक उद्धारकर्त्ता और प्रभु करके विश्वास करते और उन्हें ग्रहण करते हैं उनको अब परमेश्वर क्षमा देने के लिए योग्य हैं। इसलिये पवित्रशास्त्र जो इन शब्दों से आरंभ होता है कि, ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।''और इन शब्दों से अंत होता है कि ''परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह (ईसा मसीह) में अनंत जीवन है।''

प्रिय मित्रों , प्रभु यीशु आप से प्रेम करते हैं और इन वचनों के द्वारा आपका स्वागत करते हैं , ''हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ , मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।''उनके वचन पर विश्वास करके उनके पास यह कहते हुए आयें , ''हां, प्रभु, मैं अपने पापों को छोड़ कर आप का शिष्य बनूंगा क्योंकि क्रूस पर आपकी मृत्यु ही मेरी एक आशा है। मुझे अपना पुत्र बना लीजिये और मुझे अपनी शान्ति प्रदान कीजिये। इस प्रार्थना को करते हुए परमेश्वर से मेल कर लीजिये।

अब परमेश्वर का आत्मा आपकी सभी गलतियों को सही करने में आपकी मदद करेगें जो कि आपके विवेक पर भारी बोझ डाले हुए है और परमेश्वर स्वयं ही आपसे अपने वचन बाइबल के द्वारा बातें करेंगे।

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया , वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी , उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए। '' (यशायाह 53:5)